International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 01-07-2020; Accepted: 15-07-2020; Published: 02-08-2020
Volume 2; Issue 3; 2020; Page No. 19-21

प्रेमचंद के कथा साहित्य में निहित मनोवैज्ञानिक विसंगतियां, उनका विश्लेषण एवं प्रासंगिकता

रंजीता भटनागर
छात्रा, हिन्दी विभाग, महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
वर्तमान युग में व्यक्ति संबंधों में निहित विसंगतियों के कारण मानसिक समस्याओं से जूझ रहा है। जीवनेच्छा से पूर्ण स्त्री या पुरूष को जब प्रतिकूल वातावरण मिलता है तो उनकी समस्त आकांक्षाए मिट्टी में मिल जाती है। मानसिक विरोध की स्थिति में वह सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता। वर्तमान युग में दाम्पत्य रिश्तों में मनभेद व मतभेद के चलते मानसिक रूप से उथल–पुथल मची हुई है। जिसके परिणामस्वरूप दम्पत्ति परस्पर घुटन, कुंठा, तनाव, द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, घृणा, असंतोष, अवसाद, हीनत्व जैसी मनोग्रंथियों के शिंकजें में जकड़े हुये है ये मानसिक ग्रंथियॉ दाम्पत्य रिश्तों के लिए आज चिंता का विषय बनी हुई है। इन्हीं मनोविकृतियों के पनपने से वैवाहिक जीवन चिंता व शोक का अड्डा बना हुआ है। वर्तमान विषम परिस्थितियों में प्रेमचंद साहित्य में निहित मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन करना ही हमारे शोध अध्ययन का उद्देश्य है। हिन्दी साहित्य के पुरोधा प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों द्वारा जन–साधारण की मनोदशाओं व मनोविकारों का बड़ा ही सूक्ष्म मनोविश्लेषनात्मक वर्णन किया है। प्रेमचंद जी मनोवैज्ञानिक रचनाकार न होकर भी मानव की अनुभूतियॉ, अर्न्तद्वन्द्व, संघर्ष आदि प्रवृतियों को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पद्धति द्वारा उघाड़ कर रख देते हैं। भारतीय समाज में सामाजिक कुप्रथाएं, स्वभावगत भिन्नता, अतृप्त कामवासना अनेक ऐसे मनोवैज्ञानिक पहलु हैं जो व्यक्ति में अनेक मनोविकारों व मनोग्रंथियों को जन्म देते हैं जिसके परिणामस्वरूप वह तनाव, घुटन, ऊब, एकाकीपन, अरूचि, क्रोध, जैसे अनेक मनोविकारों को पाल लेता है और स्त्री–पुरूष संबंधों में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यही कारण है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रेमचंद कृत उपन्यास व कहानियों में स्त्री–पुरूष संबंधों में निहित मनोवैज्ञानिक विसंगतियों के कारण आई विकृतियों और विकरालता को समझने का हमारा प्रयास निहित है। प्रेमचंद जी द्वारा रचित सेवासदन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा आदि उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता की झॉकी देखने को मिलती है। नया विवाह कहानी में स्त्री–पुरूष संबंधों में मानसिक उतार–चढ़ाव एवं एकाकीपन से उपजी निराशा एवं कुंठित मनोविकारों का प्रस्तुत किया है। युगदृष्टा प्रेमचंद जी ने जहॉ अपनी उपन्यास एवं कहानियों द्वारा मानव मन के मनोविकारों एवं मनोग्रंथियों को उजागर किया है वहीं वे सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुये उच्च मानवीय मूल्यों की सुरक्षा, सरंक्षण और विकास में प्रयासरत दिखाई देते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत शोध आलेख में वर्तमान मनोवैज्ञानिक विसंगतियों को समझने हेतु प्रेमचंद साहित्य में निहित मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उजागर करने का हमारा प्रयास निहित है।

मुख्य भाब्दः मनोविज्ञान, मनःस्थिति, मनोग्रंथियां, मनोविकार, स्त्री–पुरूष संबंध

प्रस्तावना

अत्याधुनिक जीवन में यदि उत्तर आधुनिक संस्कृति की बात करते है तो वर्तमान संस्कृति को किसी भी ऐतिहासिकता के साथ नहीं जोड़ा जा सकता वर्तमान में पश्चिमी संस्कृति की घुसपैठ का प्रभाव वर्तमान भारतीय संस्कृति पर स्पष्ट तौर पर परिलक्षित होता है। जिसके परिणामस्वरूप व्यक्तियों का मशीनीकरण हो रहा है यंत्रीकरण के युग में युवाओं की मानसिकता में जो क्रांति उत्पन्न हुई है उससे संबंधों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है पाश्चात्य के रंग में रंगे हुये युवक–युवती विकृत मानसिकताओं के शिकार हो रहे है जिसके परिणामस्वरूप संबंधो में भी अनेक विकृत बदलाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

वर्तमान युग में विवाह संस्था केवल धार्मिक या सामाजिक कार्य के रूप में स्थापित नहीं है बल्कि स्त्री–पुरूष की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम बनी हुई है। आज पत्नीत्व और मातृत्व का सुख मात्र सामाजिक अनिवार्यता के रूप में ही शेष है आज स्त्री अपने व्यक्तित्व व अस्तित्व की पहचान के लिए जागरूक हो रही है तो वहीं अपनी पत्नीत्व से विमुख हो रही है वर्तमान में पारिवारिक संबंधों में जो बदलाव दिखाई दे रहे है उसका बहुत बड़ा कारण स्त्री रूपी आधार की गतिशीलता ही है। वर्तमान में पुरूष मानसिक रूप से कितना ही आधुनिक होने का दिखावा क्यों न करे परन्तु पत्नी के रूप में उसकी परिकल्पना आज भी पारम्परिक प्रतिमानों से आबद्धपूर्ण है वहीं स्त्री भी आधुनिक विचारों से प्रभावित होकर अस्तित्व चेतना से सम्पन्न है लेकिन कहीं न कहीं पारम्परिक मूल्यों की मानसिकता से आज भी मुक्त होने में असमर्थ महसूस कर रही है। यहीं कारण है कि दाम्पत्य रिश्तों में स्त्री –पुरूष का द्वन्द्व आज भी समस्या के मुख्य केन्द्र में बना हुआ है। स्त्री–पुरूष संबंधों की अर्न्तद्वन्द्व की मनोस्थिति के संबंध में रेणुका नैयर ने लिखा है – '' वैवाहिक संबंधों की भॉति संबंधों में भी जबरदस्त परिवर्तन हुआ है। इस क्षेत्र में त्याग, उत्सर्ग, बलिदान, और आत्मा का आत्मा से मिलन, शारीरिक,पवित्रता जैसे आदर्श अर्थहीन हो चुके है। समकालीन कहानी के स्त्री–पुरूष शरीर और भाव के मिले –जुले धरातल पर प्रेम को स्वीकारते हैं। प्रेम का अस्तित्व भौतिक जगत् के बीच है। आध्यात्मिक साधना में नहीं। प्रेम की कोई परिणति अनिवार्य नहीं रह गई वह स्त्री–पुरूष की निजी अनुभूति बन गई है।''[1]

वर्तमान में मानसिक विकृतियों के विषाक्त कीटाणु अधिकांश युवाओं की मनोवृत्तियों में प्रवेश कर चुके है। अत्याधुनिक जीवन में स्वभावगत तथा चरित्रगत विभिन्नता प्रणय तथा वैवाहिक संबंधों को भी उनके केन्द्र से विचलित कर रही है। यहीं कारण है कि मनोविकारों व मनोग्रथियों की उपज का यह विषाक्त माहौल वर्तमान में दम्पत्तियों को अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश कर रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन में हमने वर्तमान मे मानवीय–संबंधों में आई नवीन मनोविकृतियों का अध्ययन करने के लिए प्रेमचंद के कथा साहित्य को आधार बनाया है। प्रेमचंद जी विशाल कथा साहित्य के रचनाकार और

उनका साहित्य भारतीय संस्कृति की धरोहर है। प्रेमचंद जी ने सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक, शैक्षिक पहलुओं के साथ मनोवैज्ञानिक पहलुओं का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया है। प्रेमचंद जी भले ही मनोवैज्ञानिक कथाकार के रूप में प्रसिद्धि नहीं पा सके परन्तु वे अपने साहित्य में मनोविश्लेषनात्मक पहलु से भी अछूते नहीं रहे हैं। प्रेमचंद जी स्वयं मनोविज्ञान के विषय में लिखते है कि – '' साहित्य मनुष्य की सुषुप्तावस्था में पड़ी भावनाओं को जागृतावस्था में लाने की चेष्टा करता है। उन्होनें लिखा कि लेखक मानव प्रकृति का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करता है, मनोविज्ञान का अध्ययन करता है और यह यत्न करता है कि उसके पात्र हर हालात में हर मौके पर इस तरह का आचरण करें, जैसे रक्त–मांस का बना मनुष्य करता है।''[2]
प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास व कहानियों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के साथ जीवन के यथार्थ तथा उसके स्वाभाविक चित्रण को भी प्रस्तुत किया है। वे पात्रों की सामाजिकता और उनकी क्रियात्मकता को प्रस्तुत करने में निपुण हैं वहीं वे पात्रों की निजता व व्यक्तिगत प्रवृतियों को प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचंद रचित सेवासदन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा, जैसे उपन्यास नयाविवाह कहानी मे मनोवैज्ञानिकता की झांकी के दर्शन होते है। प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं में समान ऐसे पात्र गढ़े हैं जो उन्मादी बीमारियों से ग्रस्त होकर मानसिक समस्यओं से जूझ रहे हैं। इस प्रकार प्रेमचंद जी का निम्न कथन बिलकुल सार्थक प्रतीत होता है – '' विपत्ति में हमारी मनोवृत्तियां बड़ी प्रबल हो जाती हैं। उस समय बेमुरौवती घोर अन्याय प्रतीत है और सहानुभूमि असीमकृपा।''[3]
प्रेमचंद युग में स्त्री–पुरूष संबंधों में विकट समस्याएं विद्यमान थीं। दहेज प्रथा, अनमेल विवाह , बहुविवाह, लिंगभेद जैसी समस्याओं ने स्त्री–पुरूष संबंधों में असुंतलन स्थापित कर अनेक मनोविकृतियों को जन्म दिया। पितृसत्तात्मक समाज में जहॉ नारी मानसिक पीड़ा को झेलते हुये तनाव, कुंठा, घुटन, निराशा के संत्रास का झेल रही थीं वहीं पुरूष अपने अहम, क्रोध, निष्ठुरता, अधिकारभाव, हीनत्वभाव जैसी मनोग्रंथियों की जकड़न से अपनी मूल प्रवृतियों व मूल स्वभावों को जन्म दे रहे थे। पति–पत्नी ऐसी विषम परिस्थितियों में विवाह बंधन को निभाने के लिये विवश थे। संबंधों में मातृ औपचारिकता ही शेष थी जिसके परिणामस्वरूप वे आंतरिक द्वन्द्व एवं संत्रासप्रद जीवन को झेलने के लिये विवश थे। यही कारण है कि प्रस्तुत अध्ययन में प्रेमचंद जी के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त द्वारा वर्तमान मानव–जीवन की मनोवैज्ञानिक विसंगतियों को समझने का हमारा प्रयास निहित है। जिन्हें हम निम्न मनोग्रंथियों या मनोविकारों द्वारा समझने का प्रयास करेंगे :–
तनावः–प्रेमचंद जी ने 'सेवासदन' उपन्यास में गजाधर एवं सुमन के दाम्पत्य जीवन में असतोष के चलते तनाव की मनोःस्थिति को उजागर किया है। पति की शंकालु मनोवृति से त्रस्त एवं दुर्वासनाओं की ग्रस्तता के कारण सुमन का वैववाहि जीवन के स्वप्न बिखर जाते हैं और असंतोष से भरकर मानसिक द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप गजाधर एवं सुमन के दाम्पत्य जीवन में तनाव घुल जाता है। पति द्वारा लॉछित कर जब सुमन को घर से निकाल दिया जाता है तो वह सोचती है कि – '' मैं यह सब दुःख क्यों झेलती हूॅ ? एक झोंपड़ी मे टूटी खाट पर सोती हूॅ ? सुखी रोटियॉ खाती हूॅ , नित्य घुड़कियॉ सुनती हूॅ। क्यो ? मर्यादा पालने के लिये ! लेकिन संसार मेरे इस मर्यादा–पालन को क्या समझता है ? उसकी दृष्टि मे इसका क्या मूल्य है ? क्या यह मुझसे छिपा है ? दशहरे के मेले में, फूलबाग में, मंदिरों, सभी देख रही हूॅ।''[4]
इस प्रकार पति का पाश्विक व्यवहार एवं पत्नी की लालसाएं दाम्पत्य जीवन में असंतोष को उत्पन्न कर तनाव से भर देती है। चन्द्रकान्ता कृत 'गए वक्त का मुहावरा' कहानी में पति–पत्नी दोनों का नौकरीपेशा होना दाम्पत्य जीवन में तनाव उत्पन्न कर देता है। मिस मेहता नौकरीपेशा होने के कारण घर–परिवार की जिम्मेदारी वहन करने में असमर्थ होती हैं। पति से सहयोग की थोड़ी सी उम्मीद उन्हें निराशा ही देती है। परस्पर सहयोग का अभाव वैवाहिक जीवन में तनाव का माहौल उत्पन्न कर देता है। पति का निम्न कथन उसकी पुरूषोचित संकीर्ण व्यवस्था का परिचायक है –'' यह मेरा काम नहीं है। मै दिन भर ऑफिस में खटकर थका मौंदा घर लौटता हूं और मै बाहर पिकनिक पर जाती हूॅ। घर लौटते ही खाना बनाने किचन में घुस जाती है। पिंकी के पास बैठुॅ तो वह बिना खाए पिए सो जाती है। निभा नहीं पाती तो नौकर रख लो। घर भी देखेगा बच्ची भी। तो छोड़ दो नोकरी घर बार देख लों। ''[5]

इस प्रकार नौकरी पेशा पत्नी पति से सहयोग की आकांक्षा रखकर पति की अहम वृति द्वारा प्रताड़ित होती है आपसी सहयोग व सामन्जस्य के अभाव में पारिवारिक जीवन तनाव से भर उठता है।

ऊबः–दाम्पत्य जीवन में यदि स्त्री–पुरूष के व्यवहारों , रूचियों एवं अभिरूचियों में पृथकता हो तो जीवन में ऊब उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। प्रेमचंद जी ने ''कर्मभूमि'' उपन्यास में अमरकान्त और सुखदा जैसे एक ऐसे दम्पत्ति को प्रस्तुत किया है जिनमें विचारों, व्यवहारों, आदर्शो एवं मनोभावों की असमानता के कारण उनके दाम्पत्य जीवन में एक–दूसरें के प्रति उकताहट की मनोस्थितियां जन्म ले लेती है। दोनो के विचारों एवं परिवेशों की प्रतिकुलता से उपन्यास का नायक अमरकान्त की मनोदशा कुछ इसप्रकार अभिव्यक्त होती है– ''इधर अमरकान्त भी इस जीवन से ऊब चुका था। सुखदा के साथ जीवन कभी सुखी नहीं हो सकता, इधर इन डेढ़–दो महीनों में उसे काफ़ी परिचय मिल गया था। दोनों का जीवन–धारा अलग, आदर्श अलग, मनोभाव अलग। केवल विवाह–प्रथा की मर्यादा निभाने के लिए वह अपना जीवन धूल में नही मिला सकता, अपनी आत्मा के विकास को नही रोक सकता। मानव–जीवन का उद्देश्य कुछ और भी है, खाना, कमाना और मर जान नही।''[6]
वैवाहिक जीवन में पति–पत्नी के परस्पर खट्टे–मीठे अनुभव जीवन–पर्यन्त चलते रहते हैं। कभी–कभी ऐसी परिस्थितियॉ उत्पन्न हो जाती हैं जो उनके मनोभावों को गहराई तक प्रभावित करती है और फिर ऊब जैसी मनोवृतियों का उदय होना भी एक प्रकृति हैं। बिना प्रयास के मिला सुख अधिक काल तक आकर्षक नहीं लगता और फिर मन की चंचलता जो कि हर क्षण बदलती है, नये की कामना करती है ऐसी स्थिति में तटस्थता बनाए रखना मुश्किल ही है। अमरकान्त और सुखदा की विचार वैमनस्यता के कारण अमरकान्त का मन भूत भविष्य में गोते खाने लगता हैं और वह अपने दाम्पत्य जीवन में ऊबाऊपन महसूस कर विचलित होने लगता है। अमरकान्त और सुखदा जैसी दम्पत्ति जिनके आचार–व्यवहार में कोई साम्य नहीं दिखलाई पड़ता दाम्पत्य जीवन में नीरसता होना स्वाभाविक ही है जिसके परिणामस्वरूप अनेक नवीन समस्याएं जन्म लेने लगती हैं। अमरकान्त विवाह बंधन की मर्यादा निभाने के लिए बाध्य नहीं होना चाहता और अपने इस वैवाहिक जीवन की ऊब से निकलकर अपने अन्य उद्देश्य को पूरा करके अपनी आत्मा का विकास करना चाहता है।
वहीं समकालीन लेखिका मेहरून्निसा जी ने ' आदम और हव्वा ' कहानी संग्रह से संकलित 'अपने–अपने दायरे' कहानी में पति की उदासीनता और बेपरवाही से पत्नी का दाम्पत्य जीवन दुःख निराशा और ऊब से भर जाता है। पति की गैर जिम्मेदारी के कारण पत्नी आर्थिक अभावों को झेलते हुए भी परिवार की हर जिम्मेदारी को बिना शिकन के उठाती है पति की स्वयं के प्रति उदासीनता व ऊब को वह बखूबी जानती भी है। यही कारण है कि वह कहीं न कहीं अन्दर ही अन्दर टूटती बिखरती सी हुई वह अपने वैवाहिक जीवन में व्यथित सी हो जाती है। माया अपनी मॉ की इस पीड़ा का महसूस करती हुई कहती है – '' बिल्कुल पति की तरफ से ऊबी हुई एक नारी, जो सामने सबकुछ देखकर भी

ऑखे बन्द कर लेती है, जैसे सामने वाले से कोई सम्बन्ध न हो, कोई रिश्ता न हो। ''[7]

दाम्पत्य जीवन में पति की बेरूखी पत्नी के प्रति जहॉ ऊब को दर्शाती है वहीं पत्नी भी स्वाभीमानी होने के नाते अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में असमर्थता पाती है और वह भी दाम्पत्य संबंधो को नजर अंदाज कर अपनी ऊब ही प्रदर्शित करती है। इस प्रकार वैवाहिक जीवन में यदि ऊब या नीरसता व्याप्त हो जाए तो सम्बन्धो में दूरी आना तो तय होगा ही।

'घुटन':–प्रेमचंद जी कृत 'प्रतिज्ञा' उपन्यास पति की निष्ठुरता के कारण पत्नी जिस मानसिक घुटन की तपन में तपती रहती है उसका मार्मिक चित्र खींचा गया है। कमला प्रसाद और सुमित्रा के विचार वैषम्यता उनके दाम्पत्य जीवन में मनभेद की स्थिति उत्पन्न कर देती है। जिससे वह मानसिक घुटन को हर समय महसूस करती है– ''बनाव–श्रृंगार का तो उसे मर्ज–सा हो गया था। पति के हृदय को पाने के लिये वह नित्य सिंगार करती थी और इस अभीष्ट के पुरे ना होने से उसके हृदय में ज्वाला सी दहकती सी रहती थी। घी की छीटों से भभकना तो ज्वाला के लिये स्वाभाविक ही था, वह पानी के छीटों से भभकती थी। कमला प्रसाद जब उससे अपना प्रेम जताते तो उसके जी में आता छुरी मार लॅूं। घाव में यों ही क्या कम पीड़ा होती है कि कोई उस पर नमक छिड़के।''[8]

घुटन एक मनःस्थिति है जो व्यक्ति के लिए हानिकारक तो है ही अपितु उसे आन्तरिक रूप से उसे अन्दर ही अन्दर कुरेदती रहती है। कई बार जब व्यक्ति शारीरिक व मानसिक अक्षमताओ को इच्छापूर्ति में बाधक पाता है और एकाकीपन की त्रासदी का भुक्तभोगी होता है वहॉ घुटन और संत्रास की स्थिति होना स्वाभिक है। पत्नी सदैव पति प्रेम की आकांक्षी होती है उसकी सांसों में पति प्रेम की लालसा फूलो की तरह रची–बसी होती है स्त्री का मन की तृसित प्यास धन से नहीं बल्कि प्रेम से ही बुझती है यहीं प्रेम, सानिध्य और अधिकार ही शायद एक स्त्री या एक पत्नी की लालसा है जिसके वंशीभूत वो अपने सारे दुःख, कष्ट और संस्कारों को दरकिनार कर भावना और त्याग की बहती नदी बन जाती है। परन्तु हमारे जीवन में दाम्पत्य – प्रेम एक ऐसी तपस्या की सामग्री है जिसमें प्रेम, आत्मीयता, समर्पण एवं पवित्रता जैसे मूल मंत्रों का मिश्रण अति आवश्यक है। यदि वैवाहिक जीवन में दोनों मे से किसी एक के भी मन में विरक्ति या असंतोष की मनोवृति पनपने लगे तो इसका परिणाम काफी दुःखद परिस्थितियों में हो सकता है। प्रस्तुत कहानी में पति के स्नेहित सानिध्य से वंचिता पत्नि और पति की विलासिताओं से अर्न्तमन में होने वाली घुटन जिसे वह कभी अपने चेहरे पर उत्पन्न न होने देती थी वह अंदर ही अंदर नासूर बनकर धीरे–धीरे उनके दाम्पत्य जीवन में जहर घोलने लगी थी। उनके असंतुष्ट मन में शापूरजी के प्रति क्रोध, पीड़ा, झुझंलाहट व अपमानबोध का सैलाब जिस ज्वामुखी के रूप में उनके हृदय में दबा पड़ा था कावसजी के कोमल व प्रेमपूर्ण शब्दों का सानिध्य पाकर कतरा–कतरा होकर शीरीं की ऑखों में ऑसू के रूप में द्रवित होकर उमड़ने को बेताब होने लगा। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में पति की भोग विलासी प्रवृति से दाम्पत्य जीवन में स्त्री के घायल मन की टींस, चुंबन को अन्दर ही अन्दर कुरेद रही थी और यह मूक घटन कहीं न कहीं किसी के अपनेपन में भावनाओं की सम्बलता ढूंढ रही थी।

वहीं आधुनिक लेखिका मृदुलाजी द्वारा रचित 'हरि बिंदी ' कहानी विवाह संस्था के निहित परम्परागत नैतिक आदर्शो व नियमों में जकड़ी स्त्री मन की घुटन व मानसिक द्वन्द्व का चित्रण कर स्वतंत्र व मुक्ति की आकांक्षा से छटपटाते मन का दाम्पत्य जीवन में चित्रण किया है। पति राजन के दिल्ली जाने पर पत्नी स्वयं को आंतरिक घुटन से स्वयं को मुक्त पाती है ओर स्वयं का खुश व स्वतंत्र महसूस करती है।'' फिर आंख खुली तो साढे आठ बज चुके थे। उसने एक प्याला चाय बनायी और खिड़की का पर्दा हटाकर झांकने लगी। दूर तक धुंध छायी थी। आज जरूर बरसात होगी,उसने सोचा। उसे धुंध बहुत भली लगती है। जब मालूम नहीं पड़ता, वहां कुछ दूर पर क्या है तो अनायास आशा होने लगती है कि कोई अनुपम ओर मोहक वस्तु होगी। मैं भी खूब हूॅ, उसने मुस्कराकर सोचा, मुझे धुंध में खुलापन लगता है और सूर्य के प्रकाश घुटन !''[9]

प्रस्तुत कथन दाम्पत्य जीवन में पत्नी को व्याप्त घुटन से निकालकर उसके अस्तित्व व मुक्ताकांक्षा के परिवेश में ला खड़ा करता है। जो भारतीय परिवेश में नया दिशा का सूचक प्रतीत होता है।

एकाकीपनः– जीवन साथी एक ऐसी केन्द्रीय धुरी है जिससे दाम्पत्य जीवन की समस्त खुशियां जुड़ी होती हैं परन्तु दाम्पत्य जीवन में प्रेम, उमंग एवं उत्साह की कमी के चलते अपने जीवन साथी के द्वारा की गई उपेक्षा या अस्वीकृति से कई बार मन में एकाकीपन और उदासीनता की मनोवृति पनपने लगती है कुछ परिस्थितियों में व्यक्ति अपने अकेलेपन की पूर्ति अन्य संबंधों में तलाशने लगता है या फिर कुंठित होकर निराशा में डूब जाता है। बर्नार्ड शॉ के अनुसार ''लोग मरते तो बहुत पहले हैं, लेकिन दफनाए बहुत बाद मे जाते हैं। मरने और दफनानें के बीच का यह फासला ही अकेलेपन त्रासदी है, जिसके आदमी घूट–घूट मरता है। अकेलेपन का कारण मन है।''

प्रेमचंद जी ने 'नया विवाह' कहानी में पति के स्नेहहीन व्यवहार के फलस्वरूप स्त्री के एकाकीमन की दयनीय मनोदशा का चित्रण किया है। लीला के प्रति लाला डंगामल का स्नेहहीन व्यवहार उन्हें व्यथित को करता ही था और उन्हें अकेलेपन की अनुभूति भी कराता था। लीला अपने पति की सेवा पहले से ज्यादा करती, उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई कार्य न करती पर फिर भी अपनी अहमियत को न पाकर वह चुप रहती और इसी अकेलेपन व विकलवेदना अपनी पति की राह देखते–देखते उसके प्राण निकल गये। लीला का कुंठित व्यक्तित्व एकाकीपन की त्रासदी का ही दुःखद परिणाम है। –''लीला ने उन्हें असमंजस में देखकर कातर स्वर में पूछा– '' कुछ बतला सकते हो, कै बजे आओगे।'......

दुविधा में डरते–डरते बोली ' '' अब तक तो हल्की थी, लेकिन अब कुछ–कुछ भारी हो रही है। तुम जाओं दुकान पर लोग तुम्हारी राह देखते होगे। हॉ, ईश्वर के लिए एक–दो न बजा देना। लड़के सो जाते हैं, मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता, जी घबराता है।''......लाला जी वादा करके चले गए, लेकिन दस बजे रात को एक मित्र ने मुजरा सुनने के लिए बुला भेजा। इस निमंत्रण को कैसे इनकार कर देते। जब एक आदमी आपको खातिर से बुलाता है तब यह कहॉ भलमनसाहत है कि आप उसका निमंत्रण अस्वीकार कर दें। लाला जी मुजरा सुनने चले गए, दो बजे लौटे। चुपके से आकर नौकर को जगाया और अपने कमरे में जाकर लेट रहे। लीला उनकी राह देखती, प्रतिक्षण विकल वेदना का अनुभव करते हुई न जाने कब सो गई थी। अंत को इस बीमारी ने अभागिनी लीला की जान ही लेकर छोड़ा ।'' [10]

एकाकीपन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। जीवन साथी की संवदेनहीनता व उपेक्षा के परिणामस्वरूप हृदय में नकारात्मक भावनाएं प्रवेश कर जाती है जिससे वह एकाकीपन की त्रासदी से घिरकर कुंठित हो जाता है और धीरे–धीर यह मनोविकार उसके स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव डालने लगता है।

वहीं समकालीन लेखिका उषा प्रियंवदा कृत 'शेषयात्रा' (1984) उपन्यास में पति प्रणय द्वारा अनु को तलाक दिये जाने पर वह अकेलेपन की घुटन को झेलती हुई दीपांकुर से विवाह का निर्णय लेती है। वहीं प्रणव जब अस्वस्थ होकर अनु के पास आता है तो वह पश्चाताप की अग्नि और अकेलेपन की टीस को याद करता हुआ कहता है '' जब मैं कहता हूं कि मै अकेला हूॅ , तो उसका मतलब है, एकदम अकेला, बिना बीबी–बच्चों के एकदम अकेला।''[11]

इस प्रकार दाम्पत्य जीवन में एकाकीपन और विलय होने पर भी एकाकीपन की टीस बड़ी दुःखदायी होती है। रिश्तो को तोड़ना तो बड़ा

सरल होता है पर जब जीवन साथी के बिना जो अपूर्णता और रिक्तता को व्यक्ति झेलता है तब उसे अपनी गल्ती का पश्चाताप होता है, पर तब तक बहुत दे हो चुकी होती है।

अरूचि :—वैवाहिक जीवन में पति—पत्नी में अनबन होना तो सामान्य सी बात है परन्तु यदि एक —दूसरे के प्रति अरूचि की मनोस्थिति उत्पन्न हो जाये तो परिवार पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अक्सर हम देखते है कि आयु की मध्यावस्था में दाम्पत्य जीवन में निहित प्रेम की निःसर्ग गंध उड़ने लग जाती है। न तो पहले जैसा प्रेमाकर्षण रहता है और न ही पूर्व की तरह संबंधों में गर्मजोशी। ढलती उम्र में प्रणय का पूर्व खुमार न जाने क्यों उतर सा जाता है और दम्पत्ति एक दूसरे से विकर्षित होने लगते है। प्रेमचंद कृत 'नया विवाह' कहानी में लाला डंगामल और लीला का विवाह संबंध अधेड़ावस्था की प्रारम्भिकता में ही उस हिम—बिन्दु पर जा पहुँचता है जहॉ रिश्ते अपने प्रासंगिकता खोने लगते हैं। लाला डंगामल लीला के प्रति विरक्त होकर बाहर नये संपर्को में प्रासंगिकता का अवसर तलाशने लगते है। और वहीं लीला उनका साहचर्य प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करती है परन्तु लाला डंगामल उसकी बढ़ती उम्र का अहसास दिलाकर उसके प्रति अपनी अरूचि व्यक्त कर देते हैं— '' मानव प्रकृति की जटिलता का एक रहस्य यह था कि डंगामल जिस आनंद से लीला को वंचित रखना चाहते थे, जिसकी उसके लिए कोई जरूरत ही न समझते थे, खुद उसी के लिए सदैन प्रयत्न करते रहते थे। लीला 40 वर्ष की होकर बूढ़ी समझ ली गई थी, किंतु वे पैतालीस के होकर अभी जवान ही थे, जवानी के उन्माद और उल्लास से भरे हुए लीला से अब उन्हें एक तरह की अरूचि होती थी और वह दुखिया जब अपनी त्रुटियों का अनुभव करके प्रकृति के निर्दय आघातों से बचने के लिए रंग व रोगन की आड़ लेती तब लाला जीम उसके बूढ़े नख़रो से और भी घृणा करने लगते।''[12]

अक्सर विवाह के आरम्भिक वर्षो तक तो पति—पत्नी के संबंध काफी अच्छे होते हैं परन्तु कुछ समय पश्चात् रिश्तों के प्रति अरूचि जैसे मानसिकता की प्रति छाया आच्छादित होने लगती है और रिश्तों में ठंडापन सा आ जाता हैं। पत्नी घर के कार्यो और बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेंदारियों के निर्वहन में अपनी शारीरिक आकर्षण और स्वास्थ्य दोनो की रंगत को खो देती है यही कारण है कि स्त्री की ढलती आयु और उसकी रूप लावण्य की विलीन होती हुई रंगत धीरे—धीरे लुप्त होने लगती है और वही पुरूष अपनी मनमौजी और विलासी प्रवृति के कारण प्रेम संबंधों की प्रासंगिकता को बाहय परिवेश में ढूंढता रहता हैं लाला डंगामल एक ऐसा ही मनचला व स्वच्छन्द प्रकृति का व्यक्ति है जिसपर अधेड़ावस्था में भी यौवन का खुमार चड़ा रहता है वहीं लीला के प्रेम व समर्पण की अवेहलना कर वासनाओं में लिप्त रहकर दाम्पत्य संबंधों के प्रति अपनी अरूचि व्यक्त करता है। लीला पति की इस अरूचि व उदासीनता से कुंठित होकर घुटती रहती है और पति के साहचर्य के लिए हर संभव प्रयत्न करती है और अपनी नाकामयाबी और रिश्तों के बासीपन से अन्दर ही अन्दर घुटती रहती है। लाला डंगामल अपनी कटूक्तियों से उसके व्यक्तित्व को कुंठित करने का प्रयास करता है जिससे उसके दाम्पत्य जीवन में वेदनामयी मौन व्याप्त हो जाता है।

वहीं इसी कहानी में लीला की मृत्यू के उपरांत लाला डंगामल नवयौवना युवती आशा से विवाह करते है। आशा से विवाह करके उनकी मनोवृतियों आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखलाई देने लगता है जैसे कोई सुखा पेड़ उत्साह एवं उमंग से हरा—भरा हो गया हो परन्तु ठीक इसके विपरीत नवयुवती आशा की मनोवृति पर उम्र की असमानता का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है लाला डंगामल से विवाह करके वह जीवन के प्रति निरासक्त हो जाती है। उसकी मनोवृति में पति के प्रति सम्मान तो होता है प्रेमविहीन हृदय में किसीप्रकार की कोई रूचि एवं खुशी दिखाई नही देती ।

आधुनिक लेखिका चंद्रकांता जी ने ' नदी का काम बहना है ' कहानी में युवती द्वारा विवाह संस्था के प्रति अरूचि व्यक्त की है। प्रस्तुत कहानी की पात्र इला विवाह संस्था की स्त्री की दमित इच्छाओं का कारण मानती है और ऐसी विवाह संस्था के प्रति अपनी अरूचि भाव व्यक्त करते हुए निशा से व्यग्यात्मक रूप से प्रश्न करती है — '' तुमने शादी की निशा मां बनने का सुख उठाया। सच कहो, क्या सब कुछ मिल गया? कोई इच्छा आकांक्षा बाकी न रही? मन में कोई सूचा कोना न बचा? यानि कि क्या शादी हर लड़की की आखिरी मंजिल है?''[13]

प्राचीन समय के लिए तो उक्त कथन काफी उचित सा लगता है क्योंकि लड़की का विवाह कर अभिभावक गंगा नहा लेते थे और लड़की की मानसिकता में भी यही बात बिठा दी जाती थी कि तुम्हारे जीवन की सार्थकता विवाह में ही है पर अत्याधुनिक जीवन के बदलते हुए मूल्यों के अंतर्गत लड़कियॉ अपने जीवन में प्रति जागरूक हुई है और अपनी मंजिल को अपने भविष्य संवारने व आत्मनिर्भर बनने में ढूंढती है। पर आज भी कई लड़कियॉं या स्त्रियॉं ऐसे है। जो विवा को ही अपनी मंजिल मानकर ना चाहते हुए भी दाम्पत्य जीवन में अपनी आंकाक्षाओं को दमन करते हुए रहने को विवश है। यही कारण है कि चंदकान्ता जी ने प्रस्तुत कहानी की पात्र इला द्वारा युवती या पत्नी की दमित इच्छाओं के कारण विवाह के प्रति विरक्ति दिखाई है।

क्रोध :—क्रोध एक ऐसा मनोविकार है जो दाम्पत्य रिश्तों के लिए अत्यन्त घातक है। क्रोध को जन्म अंहकार से होता है और अहंकार के कारण ही क्रोध में वृद्धि होती है। प्रेमचंद जी ने ऐसे........ क्रोधावेश की प्रचण्ड ज्वाला मानसिकता को 'सेवासदन' उपन्यास में प्रस्तुत किया है और उसके भयावह परिणाम द्वारा दम्पत्तियों को संयमशीलता का मार्ग दिखाने का प्रयास किया है। प्रेमचंद जी ने 'सेवासदन' उपन्यास में क्रोध जैसे दूषित मनोविकार के लिए सुमन से कहलवाया है— '' ओह! नरायण, क्रोध में बुद्धि कैसी भ्रष्ट हो जाती है मुझे इनके घर को भूलकर भी न आना चाहिए था, मैंने अपने पांव में आप ही कुल्हाड़ी मारी।''[14]

इस प्रकार सुमन द्वारा क्रोध में लिया गया घर त्यागने का निर्णय उसे दालमंडी जैसे पापकुण्ड में धकेल देता है।

सुमन क्रोध में विहवल होकर बोली — '' अच्छा तो जबान संभालों, बहुत हो चुका। घंटे—भर से मुँह में जो अनाप—शनाप आता है, बकते जाते हो। मैं तरह देती जाती हूँ ,उसका यह फल है। मुझे कोई कुलटा समझ लिया है?

गजाधर —मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।''[15]

इस प्रकार गजाधर के व्यंग्यवाणों ने तेल का काम कर सुमन के क्रोध को प्रचण्ड अग्नि का रूप देकर धधकदा दिया। जिसके परिणामस्वरूप उनका दाम्पत्य जीवन विखण्डित अवस्था में पहुँच गया।

प्रेमचंद जी ने इसी उपन्यास में लिखा है — '' व्यंग्य और क्रोध में आग और तेल का संबंध है। व्यंग्य हृदय को इस प्रकार विदीर्ण कर देता है, जैसे छैनी बर्फ के टुकड़े को ।''

प्रेमचंद कहते है क्रोध में मधुर स्मृतियों का लोप हो जाता है अर्थात प्रेम की पुरानी स्मृतियॉ बनावटी प्रतीत होने लगती है। प्रस्तुत कहानी में पति द्वारा किये गये क्रोध से वह अपमानबोध से भर उठती है और अपने जीवन को धिक्कारयोग्य मानती है। स्वयं को विधवा मान लेना स्वीकार कर ऐसे राक्षसी प्रवृति के आदमी के साथ रहना उसके लिए असहय हो जाता है और वह दयातुर होकर घर छोड़ देती है। प्रेमचंद दाम्पत्य जीवन में क्रोधावेश की मनोवृति को घातक बताते है जो मधुर रिश्तों में कटुता घोल कर परिवार के अस्तित्व को समूल नष्ट कर देता है।

समकालीन लेखिका मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'कृतज्ञ ' कहानी में पति के क्रोधित स्वभाव से भयभीत पत्नी की अधीनस्ता को स्वीकार कर दाम्पत्य जीवन में तनाव को प्रस्तुत किया है और यदि पति की इच्छा के विरूद्व यदि पत्नी कोई कदम उठा भी लेती है तो उसे पति के क्रोध को मौन होकर झेलना पड़ता है। प्रस्तुत कहानी में वसुधा अनुपम से बिना पुछे अपनी पड़ोसी नानी से मिलने अस्पताल चली गई जो गांव से आकर अस्पताल में इलाज करा रही थी। जब इस बात का पता अनुपम को

चला तो वह आग बबुला होकर बोला – '' उन्हीं चमारों में बैठो जाकर। पकड लाओ मथुरा से आगरा से ..... तमाम कंगले आ जायेंगे – कोढ़ी, दरिद्री..... करवाओ सबका इलाज। उस गन्दी गली में पैदा होकर क्या सारे मोहल्ले का ठेका लिया है मैने ? निरन्तर फटते– दहकते ज्वालामुखी के समक्ष अपराधिनी–सी खड़ी भस्म हुई जा रही वह।''[16] पुरूषसत्तात्मक वृति के कारण पति अपनी पत्नी को अधीनस्त ही देखना चाहता है पत्नी का कहीं जाना या किसी से बोलना–चालना भी उसके अहम को चोट पहुंचाता है और इसी संकीर्ण वृति को वह क्रोध रूप में संचालित कर पत्नी को नियंत्रण में देखना चाहता है।

मैत्रेयी पुष्पा जी के 'चाक' उपन्यास में रंजीत और सारंग का दाम्पत्य जीवन वैसे तो सामान्य था पर श्रीधर के गांव में आते ही रंजीत के मस्तिष्क में शक के बीज अंकुरित होने लगे। रंजीत का जब इस बात का पता चला कि श्रीधर घर पर सारंग से मिलने जाता है तो वह क्रोधावेश में चिल्लाया–'' नहीं आएगा वह। कतई नहीं आएगा। इस घर का मालिक मैं हूँ। यहॉ वही होगा जो मैं चाहूँगा। मैं इस घर का कर्ताधर्ता हूँ।''[17]

अपने पुरूषत्व पर चोट खाकर रंजीत नित्य शराब पीने लगा और श्रीधर को गालियों द्वारा कोसने लगा। इस प्रकार रंजीत के अशिष्ट व्यवहार से दुःखी सारंग श्रीधर की ओर झुकने लगी। इसप्रकार बिगड़ती परिस्थितयों को रंजीत के गुस्से ने और बिगाड़ दिया। यदि वह अपने प्रेम के बल को पत्नी पर अजमाता तो दाम्पत्य जीवन बिखरने से बच जाता। रंजीत की शंकालु प्रवृति से उत्पन्न क्रोधी स्वभाव ने उनके दाम्पत्य जीवन को ओर अधिक तनाव से भर दिया।

उपसंहार :– 21 वीं शताब्दी में प्रवेश करते ही हमने पाया कि स्त्री–पुरूष संबंधों के विषय में नवीन विचारधाराओं का जन्म भी हुआ है। जहॉ स्त्री–पुरूष में शारीरिक रूप से भिन्नता पाई जाती है। वहीं उनकी मनोदशाओं में भी काफी अन्तर पाया जाता है। पति हो या पत्नी एक दूसरे से अपेक्षाएं होना स्वाभाविक है और जब हम एक दूसरे की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरते तो संबंधों में अवरोध खड़ा होना स्वाभाविक है ऐसी विषम परिस्थितियों में व्यक्ति का मन अनेक मनोदशाओं से घिर जाता है और अनेक मनोग्रंथियां पनपने लगती है। जैसे 'सेवासदन' उपन्यास में सुमन मानसिक अर्न्तद्वन्द्व से घिरी रहती है और वहीं 'प्रतिज्ञा' उपन्यास नायिका स्वपीड़न की मनोवृति से पीड़ित होती है। प्रेमचंद जी ने दाम्पत्य जीवन में स्त्री–पुरूष संबंधो से संबंधित विभिन्न घटना प्रसंगो को मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रस्तुत कर अपनी सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद रचित उपन्यास एवं कहानियों में मानव मन का सूक्ष्म रूप से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। भले ही उनके विषय साहित्य समाज–सापेक्ष रहे हों लेकिन उनका धरातल मनोवैज्ञानिक पकड़ रखता है उन्होंने पात्रों के चरित्र को केंद्र में रखकर उनके मनोभावों एवं सवंदेनाओं का प्रस्तुतीकरण मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा ही किया है जिसके लिए उन्होनें जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त को अपनाया है। प्रेमचंद जी दाम्पत्य जीवन में मानसिक द्वन्द्व को प्रस्तुत कर स्त्री–पुरूष संबंधों की अर्थहीन भटकाव, दमित यौनइच्छाएं, तनाव, कुंठा, घुटन, क्रोध ,एकाकीपन, ऊब, अरूचि जैसी मनोग्रंथियों को आधार बनाकर अपने साहित्य की रचना की है। प्रेमचंद साहित्य का मनोविश्लेषण करने पर हमने पाया कि पितृसत्तात्मक समाज में जहॉ नारी मानसिक पीड़ा को झेलते हुये तनाव, कुंठा, घुटन, निराशा के संत्रास को झेलने के लिये विवश थी वहीं पुरूष अपने अहम, क्रोध, घृणा, हीनत्वभाव, अधिकार भाव जैसी मनोदशाओं से जकड़कर संबंधों में तनाव व अंसतोष महसूस कर रहे थे यही कारण है कि संबंधों को निभाने की औपचारिक विवशता का अंर्तद्वन्द्व प्रेमचंद साहित्य में देखने को मिलता है। प्रेमचंद जी ने उपर्युक्त प्रकार की मनोदशाओं के दुष्परिणामों से अवगत कराकर सकारात्मक पहलू को अपनाने की नई दिशा दृष्टि प्रदान की है क्योंकि सकारात्मकता अपने आप में सफलता, संतोष और संयम लेकर आती है वहीं वे वैवाहिक बंधन में पति–पत्नी के मानसिक स्तर तथा मनावैज्ञानिक स्तर का समान होना केवल जरूरी ही नहीं बल्कि अत्यन्त आवश्यक मानते हैं। जहॉ प्रेमचंद का मनोविज्ञान विशुद्ध अनुभूति मूलक है वहीं प्रस्तुत शोध आलेख हेतु उपर्युक्त एवं सटीक भी है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन में जहॉ प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंधों में निहित मनोवैज्ञानिक विसंगतियां देखने को मिलती हैं वहीं आधुनिक परिप्रेक्ष में चंदकांता, मेहरून्निसा परवेज़, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा आदि लेखिकाओं के कथनों द्वारा मनोवैज्ञानिक पक्ष को रखने का हमारा प्रयास निहित है।

संदर्भ सूची

1. रेणुका नैयर, नारी, स्वतंत्र के बदलते स्वरूप,अभिषेक पब्लिकेशन,चंडीगढ़,1990,पृ 30
2. 'साहित्य का उद्देश्य, पृ 0 14
3. सेवासदन' ,प्रेमचंद, पृ 39
4. सेवासदन', प्रेमचंद, पृ0 32
5. बदलते हालात में, चंद्रकान्ता, पृ. 94–95
6. कर्मभूमि', प्रेमचंद, पृ0 91–92
7. मेहरून्निसा परवेज 'आदम और हव्वा' ' अपने–अपने दायरे' कहानी–पृ.48
8. प्रतिज्ञा', प्रेमचंद
9. हरि बिंदी', मृदुला गर्ग
10. प्रेमचंद कहानी रचनावलीः खण्ड छह, 'नया विवाह', पृ0 124–125
11. शेषयात्रा, उषा प्रियंवदा, पृ. 108
12. प्रेमचंद कहानी रचनावलीः खण्ड –छह, 'नया विवाह ',पृ0 124
13. मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास– डॉ एन. रवीन्द्रनाथ पृ. 235
14. सेवा सदन', प्रेमचंद, पृ039
15. सेवासदन', प्रेमचंद, पृ034
16. कृतज्ञ' मैत्रेयी पुष्पा
17. चाक' मैत्रेयी पुष्पा